# लोदी वंश

असि० प्रो० डॉ० संदीप कुमार
इतिहास विभाग
बी०एम० कॉलेज, रहिका, मधुबनी

सल्तनत-युग में दिल्ली के सिंहासन पर राज्य करने वाले राजवंशों में लोदी वंश अन्तिम था। बहलोल लोदी ने इस वंश की स्थापना की, सिकन्दर लोदी ने उसकी शक्ति और प्रतिष्ठा में वृद्धि की तथा इब्राहिम लोदी जब इसी दिशा में प्रगति करने के लिये प्रयत्नशील था तब बाबर ने भारत पर आक्रमण किया और दिल्ली के लोदी-सुल्तानों की सत्ता को समाप्त करके मुगल वंश की नींव डाली।

लोदी वंश का शासन काल 1451 ई० से 1526 ई० तक रहा। अपने 75 वर्ष के शासनकाल में लोदी वंश के शासक लगातार संघर्षरत रहा। लोदी वंश के शासकों के लिये यह संघर्ष त्रिमुखी था। सर्वप्रथम उन्हें जौनपुर, मालवा, गुजरात और मेवाड़ के शक्तिशाली पड़ोसी राज्यों से अपने अस्तित्व की सुरक्षा और शक्ति के विस्तार के लिये संघर्ष करना पड़ा। लोदी-शासकों का दूसरा संघर्ष उन जमींदारों और अमीरों से था जो दुर्बल सुल्तानों के समय में प्रायः अर्द्धस्वतन्त्र हो गये थे। परन्तु लोदी-सुल्तानों का तीसरा और मुख्य संघर्ष अपने अफगान सरदारों से हुआ। वे अफगान सरदार, जो उनकी शक्ति का मूल आधार थे, उनके साम्राज्य के संगठन और एक केन्द्रीय राज्य की स्थापना के मुख्य शत्रु थे। अफगानों की स्वतन्त्रता, समानता और शौर्य की प्रवृत्ति उनका मुख्य गुण थी परन्तु उनकी वही प्रवृत्ति लोदी सुल्तानों के द्वारा एक केन्द्रीय राज्य की स्थापना हेतु किये जाने वाले प्रयत्नों के लिये सबसे अधिक घातक थी।

**बहलोल लोदी (1451–1489 ई०)** – बहलोल लोदी ने दिल्ली में लोदी-राजवंश की स्थापना की। वह अफगानों की एक महत्वपूर्ण शाखा 'शाहू खेल' से सम्बन्धित था। लोदी वंश के व्यक्ति सर्वप्रथम भारत में लमगान और मुल्तान के निकट बसा था। बहलोल लोदी ने सुल्तान मुहम्मदशाह को प्रसन्न करके अमीर का पद प्राप्त किया था। अपने चाचा इस्लामखाँ की मृत्यु के उपरान्त उसे सरहिन्द की सूबेदारी भी प्राप्त हो गई। मुहम्मद शाह ने मालवा के शासक महमूद खलजी के आक्रमण के अवसर पर बहलोल से सहायता मांगी और महमूद खलजी के वापस चले जाने के पश्चात बहलोल को पुत्र कहकर पुकारा तथा उसे **खानेजहाँ** की उपाधि दी। उसके पश्चात् बहलोल ने दो बार दिल्ली को जीतने का प्रयत्न किया परन्तु दोनों ही बार असफल रहा। जब सैयद वंश के अन्तिम सुल्तान अलाउद्दीन आलमशाह अपने वजीर हमीदखाँ से झगड़कर बदायूँ चला गया। तब बहलोल लोदी ने सुल्तान अलाउद्दीन अलाउद्दीन आलमशाह को बदायूँ से दिल्ली आने का निमन्त्रण भेजा जिसे उसने अस्वीकार कर दिया। इस प्रकार बहलोल लोदी को दिल्ली का सिंहासन बिना किसी संघर्ष के प्राप्त हो गया और अप्रैल 1451 ई० को वह 'बहलोलशाह गाजी' के नाम से दिल्ली के सिंहासन पर बैठा और अपने नाम का खुत्बा पढ़वाया।

बहलोल लोदी को सुल्तान की प्रतिष्ठा स्थापित करनी थी, अफगानों की श्रेष्ठता को कायम रखना था, विद्रोही जमींदारों और सरदारों को दबाना था तथा शासन को व्यवस्थित करना था। उसने अफगान सरदारों को सन्तुष्ट करने की नीति अपनायी, उन्हें बड़ी-बड़ी जागीरें दी और उनके प्रति सम्मानजनक व्यवहार किया क्योंकि वे ही उसके राज्य और शासन के आधार थे। उसने अफगानों को भारत आने के लिये

Ajanta Products Oxford

वहाँ के राजा ने उसके आधिपत्य को स्वीकार कर लिया। हुसैनशाह शर्की के बंगाल भाग जाने पर दिल्ली की सेना ने बंगाल की सीमा तक उसका पीछा किया। बंगाल का शासक अलाउद्दीन हुसैनशाह बिहार पर दिल्ली के अधिकार को पसन्द नहीं करता था और उसने दिल्ली की सेना की प्रगति को रोकने के लिये अपने पुत्र दानियाल के नेतृत्व में एक सेना भेजी। परन्तु बिना किसी युद्ध के दोनों पक्षों में एक समझौता हो गया जिसके अनुसार दोनों पक्षों ने एक-दूसरे की सीमाओं पर आक्रमण न करने का वचन दिया।

मालवा के आन्तरिक संघर्ष के कारण सिकन्दर को उस राज्य में हस्तक्षेप करने का अवसर मिला परन्तु उसने मालवा पर आक्रमण नहीं किया। किन्तु चन्देरी पर उसने अधिकार कर लिया। राजपूत राज्यों के विरुद्ध भी सिकन्दर को कुछ सफलता मिली। उसने धौलपुर, मन्दरेल, उतगिरि, नरवर और नागौर को जीतने में सफलता प्राप्त की परन्तु समय-समय पर ग्वालियर के राजा को परास्त करके और उससे राजस्व वसूल करके भी वह ग्वालियर को अपने राज्य में सम्मिलित नहीं कर सका। 1504ई० में उसने राजस्थान के शासकों पर अपने अधिकार को सुरक्षित रखने के लिये आगरा का नवीन नगर बसाया। वहाँ पर उसने एक बादलगढ़ नामक एक किले का भी निर्माण कराया। 1506 ई० में आगरा सिकन्दर लोदी की राजधानी बनी।

धार्मिक दृष्टि से सिकन्दर लोदी असहिष्णु था। सुल्तान बनने के पश्चात् उसने हिन्दू-मन्दिरों को नष्ट करने, मूर्तियों को खण्डित करने और उनके स्थानों पर मस्जिदें बनाने की नीति अपनाई। एक तत्कालीन इतिहासकार के अनुसार उसने नागकोट के ज्वालामुखी मन्दिर की मूर्ति को तोड़कर उसके टुकड़ों को माँस तोलने के लिये कसाइयों को दे दिया। उसने मथुरा, मन्दैल, नरवर, चन्देरी आदि स्थानों पर मन्दिरों और मूर्तियों को नष्ट किया। मथुरा में उसने हिन्दुओं को मुसलमान बनने के लिये प्रोत्साहन दिया। उसने बोधन नामक एक हिन्दू को इसलिये मृत्यु-दण्ड दिया क्योंकि वह इस्लाम और हिन्दू दोनों ही धर्मों को सत्य बताता था। सिकन्दरशाह के पक्ष में यह कहा गया है कि उसने मुसलमानों में प्रचलित कुप्रथाओं को भी रोकने का प्रयत्न किया था। उसने मुहर्रम में ताजिये निकालना बन्द कर दिया था और मस्जिदों को सरकारी संस्थाओं का रूप प्रदान करके उसे शिक्षा का केन्द्र बनाने का प्रयत्न किया और मुसलमान स्त्रियों को पीरों और सन्तों की मजारों पर जाने से रोक दिया था। क्रोध में उसने शर्की शासकों द्वारा बनवायी गई जौनपुर की सुन्दर मस्जिद को भी तोड़ने के आदेश दे दिये थे यद्यपि फिर उसने उलेमाओं के कहने पर अपना आदेश वापस ले लिया था।

सिकन्दरशाह अत्यधिक परिश्रमी, उदार, न्यायप्रिय और अपनी प्रजा की भलाई चाहने वाला सुल्तान था। वह प्रातःकाल से लेकर मध्य-रात्रि तक कार्य करता था। वह न्याय में पूर्णतया निष्पक्ष था और न्यायालय में उसके प्रतिनिधि रहते थे जो यह देखते थे कि सभी व्यक्तियों को न्याय प्राप्त होता है या नहीं। उसने कृषि और व्यापार की उन्नति का प्रयत्न किया। नाप के लिये एक पैमाना "गजे-सिकन्दरी" उसी के समय में आरम्भ की गई जो लगभग 30 इंच का होता था। उसने आन्तरिक करों को समाप्त कर दिया। उसने मुस्लिम शिक्षा में सुधार करने के लिये तालम्बा के विद्वान शेख



P.T.O.

अब्दुल्ला और शेख अजीजुल्ला को बुलाया। उसके समय में संस्कृत के कई ग्रन्थों का फारसी में अनुवाद किया गया। ~~जिसका नाम "फरंगे~~ उसके आदेश से एक आयुर्वेदिक ग्रन्थ का फारसी में अनुवाद किया गया जिसका नाम "फरंगहे सिकन्दरी" रखा गया। सिकंदर शाह को ललित कलाओं का भी शौक था। उसका स्वयं का उपनाम "गुलरुखी" था। वह इसी नाम से कवितायें लिखा करता था। गान-विद्या में उसकी बड़ी रूचि थी और वह शहनाई सुनने का बहुत शौकीन था। उसके समय में गान-विद्या के श्रेष्ठ ग्रन्थ "लज्जते-ए-सिकन्दरशाही" की रचना हुई। इस प्रकार लोदी वंश के इतिहास में सिकन्दरशाह को एक सफल शासक माना गया है। अपने अंतिम दिनों में वह बयाना गया था। वहीं उसे गले की बीमारी हो गई। वह वापस दिल्ली आ गया किन्तु स्वस्थ न हो सका और नवम्बर 1517 ई० में उसकी मृत्यु हो गयी।

इब्राहिम लोदी (1517 ई० से 1526 ई०)— सिकन्दरशाह लोदी की मृत्यु के अवसर पर राजधानी दिल्ली में मौजूद पारिवारिक सदस्यों तथा सरदारों की सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया गया कि दिल्ली का अगला सुल्तान इब्राहिम शाह होगा। इस प्रकार इब्राहिम शाह लोदी लोदी वंश का अन्तिम शासक हुआ। इब्राहिम लोदी की शासकीय सफलता में ग्वालियर की विजय महत्वपूर्ण है ग्वालियर के शासक के द्वारा ~~इब्राहीम~~ इब्राहीम लोदी के भाई जलाल खां को संरक्षण देने से इब्राहीम को ग्वालियर पर आक्रमण का बहाना मिल गया। इब्राहीम ने ग्वालियर पर आक्रमण कर वहाँ के शासक विक्रमजीत (जो मानसिंह का पुत्र था) को पराजित किया तथा ग्वालियर पर अधिकार कर लिया। ग्वालियर की विजय से उत्साहित होकर इब्राहिम लोदी ने मेवाड़ पर आक्रमण किया। मालवा के प्रश्न को लेकर इब्राहिम लोदी तथा संग्राम सिंह (राणा सांगा) के बीच संघर्ष हुआ। ग्वालियर के निकट घटोली नामक स्थान पर संघर्ष में इब्राहिम लोदी पराजित हुआ। (मालवा के प्रश्न पर कई बार मेवाड़ तथा सल्तनत के बीच संघर्ष चला किन्तु इस क्षेत्र में सल्तनत की महत्वाकांक्षा असफल रही)

अफगान सरदारों के विरुद्ध अपनाई गयी नीति की वजह से अफगान सरदार इब्राहिम लोदी के विरुद्ध हो गये। दौलत खाँ लोदी तथा इब्राहिम के चाचा आलमखाँ लोदी ने बाबर की सहायता माँगी और भारत आमन्त्रित किया। नवम्बर 1525 ई० में बाबर भारत विजय अभियान के लिये काबुल से चला और 12 अप्रैल 1526 ई० को पानीपत के मैदान में पहुँचा। दोनों सेनाओं के बीच भीषण संघर्ष हुआ किन्तु बाबर अपनी युद्ध-कौशल, कुशल सेनापतित्व, तोपखाने की सहायता से इस युद्ध में विजय हुआ और इब्राहीम लोदी युद्ध भूमि में ही मारा गया। इब्राहीम लोदी की मृत्यु के साथ ही लोदी वंश के साथ-साथ दिल्ली सल्तनत का इतिहास भी समाप्त हो गया।

आमन्त्रित किया, मुख्यतया रोह से और उन सभी को उनकी योग्यतानुसार पद और जागीरें प्रदान की। परन्तु बहलोल लोदी सुल्तान की शक्ति और प्रतिष्ठा की सुरक्षा के लिये भी प्रयत्नशील रहा। उसने विद्रोही और उद्दण्ड सरदारों को दण्डित किया तथा उन पर सैनिक आक्रमण किये। उसने मेवात, सम्भल, कोल, इटावा, रपरी, भोगाँव और ग्वालियर पर सैनिक आक्रमण किये तथा वहाँ के जागीरदारों और राजाओं को अपना आधिपत्य स्वीकार करने व राजस्व देने के लिये बाध्य किया। बहलोल लोदी की एक मुख्य सफलता जौनपुर के राज्य को दिल्ली-राज्य में सम्मिलित करने की रही। जौनपुर के शर्की सुल्तानों और लोदी वंश के बीच कई संघर्ष के पश्चात् अन्ततः हुसैनशाह शर्की की पराजय हुई और वह बिहार में शरण लेने के लिये बाध्य हुआ। बहलोल ने जौनपुर राज्य को अपने अधीन कर लिया और अपने पुत्र बारबक शाह को वहाँ का शासक नियुक्त किया। जौनपुर की विजय बहलोल लोदी की सबसे महत्वपूर्ण विजय थी। बहलोल लोदी का अन्तिम आक्रमण ग्वालियर पर हुआ। ग्वालियर के राजा मानसिंह ने उसे 80 लाख टका दिया। ग्वालियर से वापस आते हुए मार्ग में बहलोल बीमार पड़ गया और जुलाई 1489 ई० में उसकी मृत्यु हो गयी।

सिकन्दरशाह लोदी (1489-1517ई०) — बहलोल लोदी ने अपनी मृत्यु से पहले अपने तीसरे पुत्र निजामखाँ को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया। निजाम खाँ की माँ जैबन्द एक सुनार की पुत्री थी। ~~इसके उसके पूर्व में हिन्दू होने~~ पर जिस कारण कुछ पारिवारिक सदस्य इसका विरोध कर रहे थे किन्तु शक्तिशाली सरदारों का साथ देकर पाकर निजामखाँ जुलाई 1489 ई० में सुल्तान सिकन्दर शाह के नाम से सिंहासन पर बैठा। गद्दी पर बैठने के उपरान्त अपने कार्यों की बदौलत सिकन्दरशाह ने यह साबित कर दिया कि वह अपने पुत्रों में योग्यतम है। उसने उन विरोधी सरदारों को जो उसे सुल्तान बनाने के पक्ष में न थे और उन दावेदारों को जो सिंहासन प्राप्त करने के लिये उत्सुक थे, समाप्त किये। उसने अपने चाचा आलम खाँ को रपरी छोड़ने के लिये बाध्य किया। उसने एक युद्ध में ईसा खाँ को पराजित किया। उसने अपने भतीजे आजम हुमायूँ को परास्त करके उससे कालपी को छीन लिया।

अपने बड़े भाई तथा जौनपुर के शासक बारबकशाह से उसने केवल यह माँग की कि वह उसकी अधीनता को स्वीकार कर ले जिससे राज्य का विभाजन न हो। परन्तु जब बारबकशाह ने इस बात को मानने से इंकार कर दिया तो सिकन्दरशाह ने जौनपुर पर आक्रमण किया। युद्ध में बारबकशाह की पराजय हुई। बारबकशाह को पकड़कर कारागार में डाल दिया गया और जौनपुर में इक्तादार की नियुक्ति कर दी गई। जौनपुर के विद्रोहों ने सिकन्दरशाह को बिहार को जीतने का अवसर प्रदान किया। जौनपुर के विद्रोही जमींदारों के नेता जुगा ने भागकर हुसैनशाह शर्की के पास शरण ली। उस अवसर पर सिकन्दरशाह ने हुसैनशाह को बिहार भागने के लिये बाध्य किया। सिकन्दरशाह ने उसका पीछा किया और उसे बंगाल में शरण लेने के लिये बाध्य किया। बिहार को दिल्ली-राज्य में सम्मिलित कर लिया गया। वहाँ से सिकन्दर ने तिरहुत पर आक्रमण किया।


P.T.O